International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 07-11-2024, Accepted: 08-12-2024, Published: 23-12-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 15-17

आधुनिकता के दौर में कुमॉऊनी भाषा का बदलता स्वरूप

डॉ. शशि पाण्डे
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डी. एस. बी. परिसर नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
जब कोई भाषा समय के अनुरूप समाज की मांगो के अनुसार अपने उत्तरदायित्व का पालन करना चाहती है, तो उस भाषा का विकास होने लगता है, इसे ही आधुनिकीकरण कहते हैं।
अनेक विद्वानों ने प्रारम्भ से ही अपनी भाषा को बचाने का प्रयत्न किया और उसे आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया किन्तु आज उसमें आधुनिकता का प्रभाव प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है परन्तु जो हमारे पूर्वजों की धरोहर है उसे बचाने के लिए अनेको प्रयास किये जा रहे हैं।
कुमॉऊनी भाषा वैसे तो प्रकृति से जुड़ी है उसमें अच्छे काम हो या बुरे सबके लिए अधिकांश जिन शब्दों का प्रयोग मिलता है चाहे वहाँ अप शब्द हो आर्शीवाद हो, आदि में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, सभी वाक्य प्रकृति से सम्बन्धित होते हैं। जैसे बकौल फुल ज्याल यह कुमाउनी का अप शब्द है जो से जो प्रकृति का शब्द है बाकल एक जंगली पौधा होता है जो उस घर की छत में लगा होता है, जिसमें कोई नहीं रहता इसी तरह कुमाऊनी में आशीर्वाद के लिए जो शब्द का प्रयोग मिलता है वह इस प्रकार है जैसे
जी रैया जागि रेया
अगास बराबर लम्ब है ज्या
पृथ्वी बराबर चोकाव है ज्या
दुब जस् पउनैरया
यो दिन भेट्न रैया

मूल शब्दः आशीर्वाद, अगास, चोकाव, आधुनिकता, उत्तरदायित्व, धरोहर, बकौल, महानगर, मोबाईल, मात्रभाषा आदि

आज हम जिस कुमॉऊनी भाषा का प्रयोग करते हैं उसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं का समावेश देखने को मिलता है, आज अधिकांश लोगो द्वारा बच्चों का आर्शीवाद "God bess you" कह कर सम्बोधित किया जाता है, किन्तु कुमाऊँ में आर्शीवाद के लिए 'जी रैया जग रैया'' आकाश जस लम्ब है ज्या पृथ्वी बराबर चौकटा है जैया दुब जस पगुरने रया, चावल पिस बेर भात, खाया, अर्थात् तुम हमेशा जीवित रहो, स्वस्थ रहो, आकाश के बराबर ऊचें बनो मतलब तुम्हारा विश्व में नाम हो, भूमि के बराबर धैर्यवान बनो, दुर्वा घास की तरह हमेशा हरे भरे रहो अर्थात् हमेशा खुश व सम्पन्न रहो, तुम्हों दीघार्यु मिले जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। किन्तु आज के आधुनिकता के दौर में मानव ना ही धैर्यवान है ना ही स्वास्थ है क्योंकि महानगरों में रखकर "God bess you" तक ही सीमित देखने को मिलता है। परिवर्तन जीवन का मुख्य तत्व है अगर भाषा का आधुनिकीकरण भाषा को समाज में आगे बढ़ा रहा है तो हमें आधुनिकता का स्वीकार करना पड़ेगा अग्रेजी भाषा के बहुत से ऐसे शब्द है जो कुमाउनी मे बोले जाते है किन्तु उच्चारण की अशुद्धियाँ होने पर भी वह समाज में बोली जाती है और समाज ने उस भाषा को स्वीकार किया है अंग्रेजी के कुछ शब्द इस प्रकार है–

कुमॉऊनी शब्द	**अंग्रेजी शब्द**
1. भोटर	1. वोटर
2. टैम	2. टाइम
3. बुरूश	3. ब्रश
4. टीन	4. टिन
5. लैट	5. लाइट

डा. जोशी के अनुसार, कुमाऊनी में हिन्दी के विकृत शब्द व अंग्रेजी के प्रभाव को प्रदर्शित करते उनका आग्रह है कि इस तकनीकी व सूचना क्रांन्ति में अंग्रेजी व वैज्ञानिक शब्दों को अपनाना व प्रयोग में लाना हर भाषा के लिए आवश्यक हो गया है। भाषा वही जीवित रह सकती है, जिसे जनता बोलती है प्रकृतिक का भी नियम है कि जिस कुँए नौले से हम पानी पीते हैं वह कभी सूखता नहीं है''''
अतः हमे कुमॉऊनी के मूल रूवरूप व शब्द संपदा को संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषाओं के शब्दों का स्वागत करना चाहिए।
किसी युग का साहित्य उसके जीवन को प्रतिबिम्बित करता है साहित्य में परिस्थितियॉ कार्यकलापों, घटनाओं और पात्रों की दृष्टि से उस युग की झलक दिखाई देती है। साहित्य ही अपने समय की मांग के अनुरूप भाव प्रकट करता है।
कुमॉऊनी भाषा पर आधुनिकता का प्रभाव हमें देखने को मिलता है यह प्रभाव राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। किन्तु इक्कीसवी सदी में कुमॉऊनी भाषा में परिवर्तन देखने को मिला जिस तरह हिन्दी का नया रूप ''हिंग्लिश'' हुआ दिखता है जो हमारे मोबाइल की भाषा बनती जा रही है उसी प्रकार कुमॉऊनी भाषा में अनेकों परिवर्तन देखने को मिलते हैं।
इन सबका माध्यम नई तकनीकी है जैसे यूट्यूब, मोबाइल या मीडिया भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा इन सबके माध्यम से भाषा का प्रयोग समाज के लोगो को देखते हए हमें अपनी भाषा का प्रयोग करना होगा इसके लिए यदि हमें अपनी भाषा में कुछ नयापन लाना भी पड़े तो हमें यह उपाय करने होंगे।
कुमॉऊ क्षेत्र में कुमॉऊनी मातृभाषा के रूप में है, किन्तु नई पीढ़ी इससे अनभिज्ञ होती जा रही है इसका मुख्य कारण पलायन है क्योंकि नौकरी की तलाश में युवा पीढ़ी अपने राज्य से दूसरे राज्य में रोजगार की तलाश में गयी और अन्य भाषा को अपनाने में इन्हें किसी प्रकार का संकोच नहीं होता है सिवाय अपनी भाषा को अपनाने में किन्तु आज हमें देखे तो युवा पीढ़ी भी अपनी भाषा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है और आधुनिकता के

दौर में अपनी सिक्रेट मानी जानी वाली अपनी मातृभाषा को बचाने का प्रयास आधुनिकता के अनुरूप कर रही है।
हम विश्व के किसी भी कोने में चले जाये चाहे अमेरिका हो लंदन हो चाहे ऑस्ट्रेलिया चाहे रूस हो या यूक्रेन, जापान, जर्मनी की भी चले जाये तो वहॉ के लोग अपनी क्षेत्रीय भाषा का ही प्रयोग करते है इसीलिए वे क्षेत्र में आगे बढ़ते जा रहे हैं आज की युवा पीढ़ी इस बात को भली–भांति समझ चुकी है कि अपनी मातृभाषा को बचाना है और आगे बढ़ाना ळे

निज भाषा उन्नित अहै
सब उन्नित को मूल

यह पंक्ति भारतेन्दु हरिश्चंद्र की है
अर्थात् इसका मतलब है कि अपनी भाषा से ही उन्नित संभव है और यही सारी उन्नितयों का मूलाधार है मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है।
युवा रचनाकारों ने कुमॉऊनी भाषा को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं, कुछ नए रचनाकार कविता, कहानी, के माध्यम से कुमॉऊनी भाषा को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के लिए आज जो संकट दिखाई दे रहा है वह एक जटिल समस्या है संकट दिखाई देता है।
नई पीढ़ी अपनी मातृभाषा को बोलने में शर्म महसूस करती है किन्तु देखा जाये तो इसमें गलती नई पीढ़ी से ज्यादा उनके माता–पिता और समाज की भी है, जो आधुनिकता के दौर में अपनी भाषा से दूर होते जा रहें है।
किसी भी क्षेत्र, राज्य के विकास में भाषा का अपना एक प्रमुख योगदान है भाषा के बगैर उस क्षेत्र की उन्नित नहीं हो सकती है क्षेत्रीय भाषा होने पर भी कुमॉऊनी भाषा तूफानों से टकरा रही है। आधुनिकता की ऑधी से संघर्ष कर रही है, परन्तु कुमॉऊनी भाषा अत्यन्त सरल सहज है।
कुमॉऊनी भाषा पहले धन्यवाद जैसा कोई शब्द देखने को नहीं मिलता है उसके स्थान में तुमर भल है जो, तुमर नानतिन बची रून, तुमर खुटन कान ले झन बुड़ो, तुम जीरियों आदि किन्तु धीरे– धीरे आधुनिकता के दौर में धन्यवाद शब्द प्रयोग किया जाने लगा।
इसी प्रकार फिर ''थैंक यू'' शब्द प्रचलन में चला जो प्रारम्भ में कुमॉऊनी में इस प्रकार प्रचलित नहीं था, हैगयो यो रूण दियों, के बात नि भै, मिठाई शब्द के लिए कुमॉऊनी भाषा में गुड़ होता है। किसी के पास होने पर प्राचीन समय में 'गुड़ खे बेर जाओ'' या बताशा खे बेर जाओ किन्तु आज इन शब्दों के स्थान पर चॉकलेट खाकर जाओंगे रूप में परिवर्तन देखने को मिलता है इन कुमॉऊनी शब्दों में अपनत्व का भाव देखने को मिलता वही इन शब्दों में आधुनिकता की झलक भी दिखाई देती है। हम दुनिया के किसी कोने में चले
जाये आज भी कोई शुभ कार्य क्यों ना हो चाहे घर में बच्चों का जन्म हो या मन्दिर में पूजा हो, आदि में गुड़ से ही स्वागत होता था किन्तु आज इसका रूप मिठाई ने लिया है।
बधाई शब्द आज देखने को मिलता है पहले इसके स्थान पर ''भल भै तुमर चेलिक व्या ठहर गो, उत्तर मे– होय यो सब तुम लोगनक आशीर्वाद छू, किन्तु आज धन्यवाद शब्द प्रचलन में बढ़ गया है।
प्राचीन काल के साहित्य में समसमायिकता का बोध दो स्तरों पर होता है युग विशेष में विभिन्न क्षेत्रों में जिन सर्जनात्मक मूल्यों की सुरक्षा उस युग के साहित्य में उनका सर्जनात्मक अनुभव सुरक्षित है जो कि उस युग का श्रेष्ठ साहित्य का गया है क्योंकि इसमें भाषिक रूप से साहित्य रचा गया होता है जो उस युग के लोगों आचार– विचारों से भी अवगत कराता है। ज्ञान, विज्ञान, धर्म, दर्शन, और साधना संबधी सारे मूल्य आंतरिक सर्जनात्मक अनुभव से दूर पड़ते जाते है। इनके लिए प्रयुक्त और बिंब केवल संकेत, चिन्ह और प्रत्यय रूप से भाषा के स्तर पर परिभाषिक बन जाते हैं कुमाउनी और अंग्रेजी के कुछ शब्द इस प्रकार है जो आधुनिकता का बोध कराते है।

कुमॉऊनी शब्द	**अंग्रेजी शब्द**
1. इंजन	1. एंजिन
2. इस्कूल	2. स्कूल
3. इस्टेशन	3. स्टेशन
4. बिस्कुट	4. बिस्किट

हिन्दी की भांति कुमॉऊनी भाषा में उत्सर्ग प्रत्यय वैज्ञानिक शब्द अंग्रेजी और फारसी शब्दों का समावेश देखने को मिलता है।

कुमॉऊनी शब्द	**अंग्रेजी शब्द**
1. जबाब	1. जवाब
2.ख्याल	2. ख्याल
3. आखिर	3. आखिर
4. इम्त्यान	4. इम्तिहान

जिस प्रकार एक कलाकार अपनी कला के माध्यम से उसे साकार रूप में व्यक्त करता है, उसी प्रकार साहित्यकार भी अपनी लेखनी से समाज के बदलते स्वरूप को साकार रूप में समाज के सामने उस समय की परिस्थति के अनुकूल चाहे वह आधुनिकता का प्रभाव हो या फिर कुछ और अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करता है।

कुमॉऊनी शब्द	**अंग्रेजी शब्द**
1. गिरफ्तार	1. गिरफ्तारी
2. गिरजाघर	2. गिर्जघर

भाषा का अपना एक दायरा है भाषा व्यक्ति से यानि रचनाकार से अलग नहीं है वह उसके ऐतिहासिक और सामाजिक संस्कार का अंग है। भाषा हमारे अनुभवों और सारी मूल्य प्रक्रियाओं को घटित करती है। फिर उनको भाषा के रूप में अर्थात शब्दों, पदों, प्रतीकों, प्रत्ययों, रूपकों, बिम्बों के प्रयोग से भाव संवेग की समानान्तर परिस्थिति व्यंजित होती है

कुमॉऊनी शब्द	**अंग्रेजी शब्द**
1. इंजन	1. एंजिन
2. इस्कूल	2. स्कूल
3. इस्टेशन	3. स्टेशन
4. बिस्कुट	4. बिस्किट

अंग्रेजी के अतिरिक्त कुमाऊँ में अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि भाषाओं के अनकों ऐसे शब्द है जो कुमाउनी के ही प्रतीत होते है और आज प्रचलन में इनका अत्यिधक प्रयोग मिलता है जैसे क्यची, कुल्ली, कुलि, चुग़ली, क़ालीन, ग़लीचा, भादुर, बहादुर आदि शब्द कुमाउनी में मिलते है
''उकी जवान कैंचि जस चल रै अर्थात् उसकी जवान कैंची की भाँति चल रही है,यहाँ जवान और कैंची दोनो ही शब्द अरबी, फारसी से कुमाउनी में आए है। इन शब्दों में आधुनिकता का पूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है।
कुमाउनी में विदेशी भाषा के शब्दों की बाहुल्यता देखने को मिलती है, तो हिन्दी भाषा का तो क्या कहना दोनों भाषाएं सगी बहनों की भाँति है। क्योंकि दोनों की लिपि देवनागरी है। सचिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन ने ठीक ही कहा है, भाषा कल्पवृक्ष है जो उससे आस्था पूर्वक माँगा जाता है, भाषा वह देती

है, उससे कुछ माँगा ही न जाए क्योंकि वह पेड़ से लटका हुआ नहीं दीख रहा है, तो कल्पवृक्ष भी कुछ नहीं देता"।
यही बात हर भाषा पर लागू होती है। अतः कुमाउनी भाषा पर आधुनिकता का प्रभाव उस भाषा की प्रगति का द्योतक है।

सन्दर्भ सूची

1. मोहन चंद्र जोशी, कुमाउनी भाषा (एक परिचयात्मक अध्यनन) पृ. 74
2. मोहन चंद्र जोशी, कुमाउनी भाषा (एक परिचयात्मक अध्यनन), पृ. 522
3. http//:nkafaltree.comkumani
4. प्रो० केशव दत्त रुवाली, कुमाउनी भाषा और संस्कृति, पृ. 94
5. रघुवंश आधुनिकता व सृजनशीलता,पृ. 31
6. प्रो. देव सिंह पोखरिया, डा. भगत सिंह, कुमाउनी भाषा का उद्‌भव एव विकास तथा
7. उसका भाषिक अध्यन, पृ. 82
8. रघुवंश आधुनिकता व सृजनशीलता, पृ. 37
9. प्रो. शेर सिंह बिष्ट, हिन्दी कुमाउनी अंग्रेजी शब्दकोश, पृ. 98
10. प्रो. चंद्रकला रावत, कुमाउनी गुजराती और मराठी समस्रोतीय – समानार्थी
11. शब्दकोश, पृ. 69
12. प्रो. केशवदत्त रुवाली, पृ.77
13. डॉ. शशि पाण्डे, कुमाउनी भाषा, पृ. 93
14. डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण, पृ. 106